NJESR/December 2021/Volume-3/Issue-12 E-ISSN-2582-5836
DOI-10.53571/NJESR.2021.3.12. 48-52

उत्तर आधुनिकता: स्त्री विमर्श

डॉ0 मौ0 इमरान खान
अध्यक्ष – हिन्दी विभाग
एम0जी0एम0 (पी0जी0) कालेज, सम्भल
mohdimranmgm@gmail.com

Received : 20 November 2021/ Revised :12 December 2021/Accepted :20 December 2021/Published :29 December 2021

इक्कीसवीं सदी अथवा उत्तर आधुनिकता के इस दौर में जिस स्त्री विमर्श अथवा स्त्री लेखन पर चर्चा तथा वहस हो रही है। वह साहित्य के लिए कोई नवीन चिन्तन एवं लेखन नहीं है। भारतीय साहित्य तथा हिन्दी साहित्य में यह चिन्तन पहले से ही देखने को मिल जाता है। यह बात अलग है कि उस समय उसका स्वरूप भिन्न था। आदियुग में नारी को केवल भोग्या के रूप में देख गया। पर्दा और चार दीवारी ही उसकी दुनिया थी। उसका कोई अपना स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं था, यदि वह पिता के घर थी तो माता–पिता व भाइयों के आधीन थी और विवाह के पश्चात् सास–सुसर व पति के आधीन थी।

उत्तर आधुनिकता के दौर में स्त्री विमर्श का स्वरूप बदला हैं। हम जिस स्त्री विमर्श की बात कर रहें हैं। वह इस दृष्टि से अलग है कि इस युग में नारी को प्राचीन व मध्ययुगीन नारी के रूप में न देखकर उसे शिक्षित , स्वतन्त्र एवं स्वावलंबी, अधिकारों के प्रति जागरूक तथा मौलिक चिन्तन के रूप में देखा गया। उत्तर आधुनिक स्त्री विमर्श पर चर्चा करने से पूर्व हमें प्राचीन व मध्ययुगीन नारी चिन्तन पर भी दृष्टि डाल लेनी चाहिए। आदिकालीन कवि आसुग ने 'चन्दनवाला रास' नामक पैंतीस छन्दों का एक लघु खण्ड काव्य लगभग 1200 ई0 में लिखा। इसकी नायिका चन्दन वाला चम्पा नगरी के राजा दधिवाहन की पुत्री थी। कौशाम्वी के राजा शतानीक ने चम्पा नगरी पर आक्रमण कर दिया, जिसमें उसका सेनापति चन्दनवाला का अपहरण कर ले गया और एक सेठ को बेच दिया। सेठ की स्त्री ने उसे आपार कष्ट दिये। चन्दनवाला अपनी सतीत्व पर अटल रहकर सबःदुख सहती रही।''[1]''जिनधर्मसूरि ने 1209 ई0 में स्थूलभद्ररास ग्रंथ की रचना की इसमें कोशा वेश्या के पास भोग विलाऊ में लिप्ट रहने वाले स्थूलभद्र को कवि ने जैन की दीक्षा लेने के बाद मोक्ष का अधिकारी सिद्ध किया।''[2] वीसलदेव रासो (नरपतिनाल्ह) के राजा भोजपरमार की पुत्री राजमती और अजमेर के चौहान राजा वीसलदेव तृतीय के विवाह, वियोग एवं पुनर्मिलन की कथा सारस शैली में प्रस्तुत है। पृथ्वीराजरासो (चन्द्रवरदायी) में भी अदभुत नारी सौन्दर्य के दर्शन होते हैं–

''मनहु कला ससिमान कला सोलह सो वन्निय
बाल बैस ससिता कला अमृत रस पिन्निय।''

'राउलवेल' रोडा नामक कवि की 10वीं सदी की रचना है जिसको बम्बई के **'प्रिंस आफ वेल्स'** संग्रहालय से उपलब्ध कर प्रकाशित कराया। यह एक चम्पू काव्य है। इसमें राउल नायिका के नखशिख का वर्णन किया गया है। 'ढोलामारू रा दूहा' 11वीं0 सदी में रचित लोकभाषा का काव्य है। इसमें ढोला नामक राजकुमार तथा मारवणी नामक राजकुमारी की प्रेम कथा का वर्णन है। भक्तिकालीन साहित्य में भी स्त्री विमर्श के बहुत सारे प्रंसग देखे जा सकते हैं। कबीर ने अपने साहित्य में नारी के अनेक रूपों का वर्णन किया है। वे पतिव्रता नारी को आदर्श मानते है–

''पतिवरता मैली भली, काली कुचित कुरूप।
पतिवरता के रूप पर बारौ कोटि स्वरूप।।''

दूसरी ओर कबीर नारी को पुरूष की अस्मिता के रूप में देखते हैं वे उसके रूप पर ना जाकर उसके गुणों की तारीफ करते हुए कहते हैं–

''नारी निन्दा न करों नारी रतन की खान ।
नारी से नर होत है, ध्रुव प्रहलाद समान ।।''

सूर के साहित्य में भी नारी सम्बन्धी विचार विचार देखने को मिल जाते हैं। सूर के भ्रमरगीत में गोपियों के विरह के माध्यम से नारी के भौतिक व आध्यात्मिक प्रेम को चित्रित किया है। तुलसीदास के 'रामचरितमानस' में सीता माध्यम से भारतीय नारी का आदर्श चरित्र प्रस्तुत किया गया तथा नारी को त्यासग व प्रेम के पर्याय के रूप में दर्शाया गया है। मुल्ला दाउद के चंदायन' में नाम लोर तथा नायिका चँदा की प्रेम कथा वर्णित है। जायसी के पदमावत में राजा रतनसेन तथा रानी पदमावती की प्रेम कथा का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है।

मेरी दूष्टि से अधिकतर रीतिकालीन साहित्य स्त्री विमर्श का एक जवलन्त प्रमाण है। यह बात अलग है कि रीतिकालीन स्त्री विमर्श केवल नारी सौन्दर्य तक ही सीमित होकर रह गया है। यह नारी सौन्दर्य कहीं–कहीं तो मर्यादा की सीमा को भी लांग गया है। घनानन्द–सुजानहित प्रबन्ध, इश्कलता, बोधा–विरहबारीश इश्फनामा, चिन्तामणि–रामायण, सुदन–सुजानचरित्र आदि कृतियों को स्त्री विमर्श की दृष्टि से देखने की आवश्यकता है। बिहारी की सतसई में प्रकृति और नारी सौन्दर्य के विभिन्न रूप मिलते है। प्रेम,विरह, भक्तिभाव, दर्शन आदि का प्रतिपादन भी इसमें मिलता है।

आधुनिक युग में 1877 ई0 में लिखित श्रृद्धाराम शर्मा फुल्लौरी का उपन्यास 'भाग्यवती' से लेकर आज तक स्त्री विमर्श के अयामों को देखा जा सकता है। उपन्यास साहित्य चाहें स्वतन्त्रता पूर्व या स्वातन्त्रयोत्तर हो, नारी का चित्रण उसका अभिन्न अंग रहा है। भारतेन्दु युग के अन्तिम चरण में पूरे देश में सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय जागरण की लहर दौड़ चुकी थी। इस युग में नारी शिक्षा, विधवाओं की दुर्दशा अस्पृश्ता एवं छुआछुत आदि को लेकर सहानूभूतिपूर्ण साहित्य लिखा गया। ''ठाकुर जगमोहन के श्यामा स्वपन में एक ब्रह्मण कुमारी तथा क्षत्रिय कुमार का स्वच्छ प्रेम वर्णन है। यहां जाति प्रथा को तोड़ने का एक रचनात्मक प्रयास किया गया है।''[3]

द्विवेदी युग में सामाजिक कुरीतियों के साथ–साथ नारी जीवन को अनेक समस्याओं को समकालीन साहित्य के माध्यम से चित्रित किया गया है। 'हरिऔध' का अधलिखा फूल नारी समस्या से प्रेरित उपन्यास है। ''गोदान' में प्रेमचन्द्र जिस तरह से धनिया और मालती का चित्रण करते हैं। वे भी पश्चिमी और भारतीयता की बहस में उलझ कर रह जाते हैं, बल्कि स्त्रीत्ववादी दृष्टि से देखा जाए तो जयशंकर प्रसाद, प्रेमचन्द्र से कही अधिक प्रगतिशील दिखाई देते हैं। वह ध्रुवस्वामीनी के पति के जीवित रहते, ध्रुवस्वामिनी का विवाह उसकी पसंद के पुरूष चन्द्र गुप्त से कराने की वकालत करते हैं।''[4]'भगवती चरण वर्मा' के भूले विसरे चित्र में भी भारतीय नारी की जागरूकता का चित्रण हैं। गंगा एक पढ़ी लिखी प्रगतिशील नारी है जो पति और सुसरालवालों के दुर्व्यवहार से रूष्ट होकर सम्बन्ध विच्छेद कर लेती है तथा नौकरी करके आत्म निर्भर होकर जीना चाहती है।

प्रेमचन्दोन्तर युग के जैनेन्द्र अपने उपन्यासों में वैयक्तिक एवं मानसिक समस्याओं को उठाया है। जैनेन्द्र का परख उपन्यास स्त्री की सशक्तता का समर्थन करता है। इसकी पात्र रंजना टुटती नहीं अपितु अपना रास्ता स्वयं तालाश करती है। त्यागपत्र की मृणाल भी आत्मपीड़न का शिकार है। जैनेन्द्र की सुनीता कल्याणी आदि सभी पात्रों का अंतर्द्वद चरम पर है। प्रसादोत्तर गंद्य साहित्य में स्त्री विमर्श के बहुत से विन्दुओं को देखा जा सकता है। 'रेणु' के मैलाआंचल की लक्ष्मी, कमली आदि स्त्रियाँ अपनी इच्छा को महत्व देती है। 'रांगेय राघव' के कब तक पुकारूँ की प्यारी और कजरी भी सशक्त नारियाँ हैं। 'अज्ञेय' के नदी के दीप की रेखा प्रखर तेजस्वी अति बौद्धिक उच्च शिक्षित और सक्रिय नारी है। वह सही अर्थों में आुधनिक नारी है।

अब हमें उत्तर आधुनिकता के दौर में स्त्री विमर्श को देखने से पूर्व उत्तर आधुनिकता को भी समझ लेना चाहिए। उत्तर आधुनिकता मेरी दृष्टि में साहित्य संस्कृति कला एवं धर्म को पुनर्व्याख्यायित करने की कोशिश कर रही है। ''उत्तर आधुनिकतावाद एक ऐसी फिसलनदार पदावली है कि हम उसे आसानी से स्थिर नही कर सकते हैं।''[5] इस तरह उत्तर आधुनिकता के अन्तर्गत उत्तर संरचनावाद, दलित विमर्श, नारी विमर्श, थर्डजेण्डर, आदिवासी विमर्श, किसान विमर्श सभी विषय आ जाते हैं। यह मानव सभ्यता एवं संस्कृति के विकास बोध की प्रक्रिया ही तो है। वर्तमान में स्त्री विमर्श समास्याओं व अन्तर्द्वद को इसके अन्तर्गत सामाहित किया जा सकता है। ''आज स्त्रियाँ लिंग भेद, महिलाओं पर हिंसा को रोकना, निजी कानून में संसोधन, महिला स्वास्थ्य तथा आर्थिक दशा आदि जैसे मुद्दों से जुझ रही है। स्त्रियों को समाज की अग्रगामी धारा से जोड़ने में महिला आन्दोलनों ने प्रमुख भूमिका निभाई है। आज साहित्य में भी महिला आन्दोलन द्वारा उठाए गए मुददे प्रमुखता के साथ उभर रहे हैं। यह एक अच्छी खबर है।''[6]

उत्तर आधुनिक युग में स्त्री विमर्श पर अपनी दृष्टि रखने वाली बड़ी लेखिकाएं जैसे– कृष्णा सोबती, मनू भण्डारी, पदमा सचदेवा, मृदुलागर्ग, उषा प्रियंवदा, मृणाल पाण्डे, चित्रा मुदगल, मैत्रेयी पुष्पा, नासिरा शर्मा, सुषमावेदी प्रभा खेतान, गीताजलि श्री, मनीषा जयंती आदि महिलाओं की समास्याओं कुण्ठाओं उसकी अस्मिता के मुददे अपने साहित्य के माध्यम से उठा रही हैं। स्त्री विमर्श लेखन में पुरूष भी पीछे नही हैं। मनोहर श्याम जोशी, कमल कुमार, शरद सिंह, उदय प्रकाश, ओमप्रकाश वाल्मीकी आदि। 'अरविन्द जैन' की पुस्तक **औरत होने की सजा** के आठ संस्करण छप चुके हैं। इनकी दूसरी पुस्तक **'औरत अस्त्वि और अस्मिता'** भी काफी चर्चित है।

उत्तर आधुनिकता, आधुनिकता के प्रति प्रतिक्रिया है। उपग्रह संचार, पूँजीवाद, सूचना विस्फोट विश्व टैक्नॉलाजी जिसके कारण परम्परागत सामाजिक व्यवस्था व संस्कृति नष्ट हुई है। इस युग में स्त्री ऐसे दोराहे पर खड़ी है कि यदि वह पश्चिमी चिन्तन को स्वीकार करती है तो अपनी संस्कृति व अपनी जड़ों से कटती है। यदि ऐसा नही करती तो अपनी अस्मिता को खोती है। अपनी अस्मिता व स्वायत्तता के लिए उसके पास तार्किक दृष्टि और विचार है परन्तु यथार्थ जीवन में ये सब बेमानी हो जाते है। आज का स्त्री लेखन वैश्विक तथा राष्ट्रीय के बीच, राष्ट्रीय तथा देशीय के बीच, देशीय तथा जातीय के बीच तथा विगत तथा आगत के बीच और आधुनिकता तथा संस्कारों के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास कर रही है। स्त्री लेखन ऐसे दौर में है। जहां परिवर्तन के अन्तहीन सिलसिले में बाध्य स्थितियाँ और अन्तः संघर्ष तेजी से बदल रहा है। इस दृष्टि से 'कमल कुमार' की कहानी मर्शी फीलिंज तथा केटलिस्ट देखी जा सकती है। सत्रियां इतिहास व संस्कृति से रूढ़ी व अन्धविश्वास को काटकार तथा वर्तमान उपभोक्तावाद की दृष्टि से बचते हुए आत्मपरीक्षण व आत्मनिरीक्षण के दौर से गुजर रही है। 'मनोहर श्याम जोशी' के उपन्यास 'हमजाद' में दिखाया गया है कि बाजारवाद के इस युग में स्त्री एक वस्तु बन कर रह गई है। 'शरद सिंह' की कहानी स्त्रीप्लस (कृपया शांत रहिए) लघुशंका की समस्या से मुक्ति की इच्छा उसे सारे आडम्बर से अलग कर देती है। सुषमादेवी के नये उपन्यास 'लौटना' की प्रवासी नायिका मीरा बार–बार आगे बढ़ती है। लेकिन फिर उसी बिन्दु पर लौट आती है। आज की स्त्री पहले से अधिक द्वन्द्व में है। जगते हुए सपने देखती है। मिथक की पुनर्रचना एवं पुनर्व्याख्या करती है। अपनी संस्कृति व परिवेश में जीवन्त् तथा संवेदनात्मक संबन्ध बनाती है। कृष्णा सोबती का जिन्दगीनामा, डार से विछड़ी, मित्रोमरजानी तथा ए लड़की आदि उपन्यास लिखें हैं। ए लड़की में भी परिवार व समाज की उपेक्षा आत्मनिर्णय और आत्मसुख महत्वपूर्ण है। 'मेत्रैयी पुष्पा' के इदन्नमम तथा 'चॉक' आदि स्त्री विमर्श पर आधारित महत्वपूर्ण उपन्यास है। उषाप्रियवंदा के उपन्यास आदि स्त्रउपन्यास 'रूकेगी नही राधिका' शेष यात्रा' तथा पचपन खम्बे लाल दीवारें की नायिका सुषमा आत्मनिर्भर है। वह घर की आर्थिक जरूरतों के कारण विवाह नही करती लेकिन मान व देह की जरूरतों के लिए चोरी छिपें प्रेम भी करती है।

नासिरा शर्मा का 'शाल्मली' मंजुलभगत का 'अनारों' गीताजंली श्री का 'माई' क्षमा शर्मा का परछायी, अन्नापूर्ण का 'स्त्री का समय' अल्का सरावगी का 'शेष कादंबरी' कलि कथा वाया वायपास' अनामिका का 'दस द्वारे का पिंजरा' आदि अनेक महिला उपन्यासकारों के द्वारा लिखे गए है जिनमें स्त्री समास्याओं का स्वर मुखरित होता है।

प्रभा खेतान स्त्री विमर्श की एक प्रमुख हस्ताक्षर हैं। उन्होंने स्त्री विमर्श सम्बन्धी आन्दोलनों में सक्रिय भूमिका निभाई है। स्त्री विमर्श के वैश्विक पैरवीकार सीमोन द बोउवार की पुस्तक **'द सेकेण्ड सेक्स'** का हिन्दी अनुवाद करके उससे हिन्दी जगत को परिचित कराया। ''प्रभा खेतान जी के उपन्यास छिन्नमस्ता, पीली आँधी, अग्निसंभवा, अपने–अपने चेहरे, आओ पेपे् घर चले आदि में वैश्विक स्तर पर जन्म लेती। नई स्त्री के नये स्वरूप को उसके तमाम अंतविरोधों एवं संघर्षों के साथ गढ़ने का प्रयास किया है।''[7] ''पीली आंधी'' में संयुक्त परिवार के वसने उजाड़ने और टुटने विखरने की विकास कथा है।' इससे पापड़ वेलने वाली स्त्रियों को सौ पापड़ वेलने पर तय रकम दी जाती है। यदि गलती से दो पापड़ एक साथ वेल दिये जाते है जो पैसे काट लिये जाते हैं ..... अफसरों को उपहार में कई सेर पापड़ यू ही दे दिये जाते है लेकिन इस कामकाजी स्त्रियों के प्रति कोई सहानुभूति नही होती।''[8] 'छिन्नमस्ता' की प्रिया उद्योगशील आधुनिक स्त्री है। उद्योग के क्षेत्र में पति से ज्यादा जानकारी होते हुए भी पति उसे बोलने नहीं देता। पुरूष का अहम् स्त्री को आगे बढ़ने नहीं देता लेकिन प्रिया अपने उद्योग में सफलता पाने में लगी रहती है। नरेन्द्र उसे आगे बढ़ते हुए देखकर उसे चरित्र हीन तक कहता है। वह उसे घर से निकलने देना नहीं चाहता, उससे चिढ़ता है और उसका उपहास करते हुए कहता है–''एक लाख का ऑडर क्या मिल गया, रानी जी नाच रही हैं। यहां हम साले करोड़ों कमाकर वही के वहीं हैं''9 'अग्निसंभवा' की आई0वी0 रात दिन मेहनत करती है। रात–रात भर जागकर कपड़े सिलती है। उसका पति उसे जंग करती है पैसे शराब में उड़ा देता है। वह इन सबसे तंग आकर एक दिन सब कुछ छोढ़कर हांगकांग चली जाती है। 'अपने–अपने चेहरे' की रमा अपने पैरो पर खड़ी एक स्वावलंबी नारी है। सारा परिवार उस पर निर्भर है वह कहती है– ''घर गृहस्थी, परिवार समाज, एक बँटा हुआ आदमी क्या दे देगा? नही वह बँटा हुआ नही है। वह तो मुझसे ताकट लेकर अपनी गृहस्थी का जुआं खीचतां है पर क्यो? इजाजत मैंने ही दी है, गलती मेरी है, दोषी मैं हूँ.....। मैं खुद इस पुरूष को छोड़ने का निर्णय तो सकती थी।''[10] 'आओ पेपे घर चलें' की आईलिन का आर्थक रूप से आत्मनिर्भर होते हुए भी अन्दर से भावात्मक रूप से टूट चुकी है। सत्तर वर्षीय आईलिन दो मस्त पतियों तथा पांच प्रेमियों की यादों में अपने जीवन में एकाकीपन को काट रही है।

अन्ततः मैं यह कह सकता हूँ कि वैश्वीकरण के इस युग में एक नई स्त्री का जन्म हुआ। वह अपनी स्मिता व अपने अधिकारों के प्रति पूर्ण सचेत हो चुकी है। वह अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ने में पूर्णतः सक्ष्म हो चुकी है। लेकिन दुःख की बात यह है कि वह अब भी पुरूषवादी सोच को नहीं बदल पा रही है। जिससें एक नये पुरूष का जन्म हो और वह इस पावर वूमेन के साथ नये तरह से अपने सम्बन्धों को स्थापित कर सके।

संदर्भ सूची:

01. हिन्दी साहित्य का इतिहास, सम्पा0, डॉ0 नगेन्द्र (संस्करण 1987) पृ0 82
02. वही, पृ0 82
03. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ0 वच्चन सिंह (तृतीय संस्करण 2009) पृ0 302
04. स्त्रीत्ववादी विमर्श :समाज और साहित्य , डॉ0 क्षमा शर्मा (संस्करण 2012)
05. उत्तर आधुनिकता :साहित्यिक विमर्श , सुधीश पचौरी (प्रथम संस्करण 1996) पृ0 13
06. स्त्रीत्ववादी विमर्श :समाज और साहित्य डॉ0 क्षमा शर्मा (संस्करण 2012)
07. शोध वैचारिकी (त्रैमासिक) सम्पा0 विश्वभर पाण्डेय अंक 1 अप्रैल–जून 2012 पृ0 61
08. वही, पृ0 63–64
09. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान (संस्करण 1997) पृ0 159
10. अपने–अपने चेहरे, प्रभा खेतान (संस्करण 1994) पृ0 75